श्री भगवती सूत्र भा. चौथे की विषयानुक्रमणिका

अनुक्रमाङ्क	विषय	पृष्टांङ्क
	पांचवे शतकका पहला उद्देशा	
१	पांचवेंशतक के उद्देशों की संग्रहार्थ गाथा	१–२
२	सूर्यके स्वरूपका निरूपण	३–१०
३	रात्रीदिवसके स्वरूपका निरूपण	११–५२
४	ऋतुविशेषादिके स्वरूपका निरूपण	५३–७७
५	लवणसमुद्र के स्वरूपका निरूपण	७८–९७
	दूसरा उद्देशक	
६	दूसरे उद्देशेका विषयों के विवरण	९८–९९
७	वायुके स्वरूपका निरूपण	१००–१२३
८	ओदनादि द्रव्य का निरूपण	१२४–१४०
९	लवणसमुद्र के विष्कम्भ का निरूपण	१४१–१४७
	तीसरा उद्देशा	
१०	अन्यतीर्थिकों के मिथ्याज्ञान पने का निरूपण	१४८–१६८
११	नैरयिकादिकों के आयुष्यका निरूपण	१६९–१८१
	चतुर्थ उद्देशक	
१२	चौथे उद्देशेके विषयोंका विवरण	१८२–१८५
१३	छद्मस्थों के शब्दश्रवण का निरूपण	२८६–२००
१४	छद्मस्थ केवली के हासादि निरूपण	२०१–२१६
१५	हरिनैगमिषिदेव की शक्तिका निरूपण	२१७–२२४
१६	अतिमुक्त अनगार के स्वरूपका निरूपण	२२५–२३८
१७	महावीर स्वामीके प्रति दो देवोंकी शिष्यविषयक वक्तव्यता निरूपण	२३९–२६२
१८	नोसंयत के स्वरूपका निरूपण	२६२–२६८
१९	देवों की भाषाका निरूपण	२६९–२७०
२०	केवली छद्मस्थ के स्वरूपका निरूपण	२७१–२७९
२१	प्रमाण के स्वरूपका निरूपण	२८०–२९०
२२	केवली के चरम कर्मका निरूपण	२९१–२९४

२३ केवली प्रणीत मनोवचनका निरूपण २९५–३०४
२४ अनुत्तर देवसंबन्धी प्रश्नोत्तर ३०५–३१५
२५ केवलीके ज्ञानके स्वरूपका निरूपण ३१६–३१८
२६ केवलीके हस्तादि न्यासका निरूपण ३१९–३२४
२७ चौदह पूर्वधरकी शक्तिका निरूपण ३२५–३३०

पांववां उद्देशक

२८ पाचवे उद्देशेके विषयोंका निरूपण ३३१–३३२
२९ छद्मस्थ के सिद्धयभाव का निरूपण ३३३–३३५
३० एवंभूत और अनेवंभूत वेदनाके विषयमें अन्यतीर्थिकों के मतका निरूपण ३३६–३५०
३१ कुलकर और तीर्थकर आदि के वक्तव्यताका निरूपण ३५१–३५७

छट्ठा उद्देशक

३२ छट्ठे उद्देशेके विषयोंका विवरण ३५८–३५९
३३ कर्म बंधके स्वरूपका निरूपण ३६०–३७३
३४ गृहपति को भाण्ड–और अग्निकाय के स्वरूपका निरूपण ३७४–३९९
३५ पुरुषकी धनुर्विषयक क्रियाका निरूपण ४००–४१६
३६ अन्यमतवादियों के मतका निरूपण ४१७–४२०
३७ नैरयिकों की विकुर्वणा के विषयका निरूपण ४२१–४२४
३८ आधाकर्मादि आहार आदि के स्वरूपका निरूपण ४२५–४३५
३९ आचार्य और उपाध्यायका सिद्धिगमनका निरूपण ४३६–४३९
४० मृषावादि के कर्मबन्धका निरूपण ४४०–४४४

सातवां उद्देशक

४१ सातवे उद्देशक के विषयोंका विवरण ४४५–४५०
४२ परमाणु–पुद्गलके स्वरूपरा निरूपण ४५१–४६२
४३ परमाणुपुद्गल आदि के विषयमें असिधरा आदिका निरूपण ४६३–४७२
४४ परमाणु–पुद्गलादिके विभाग का निरूपण ४७३–४८१
४५ परमाणु–पुद्गलके परस्पर में स्पर्शनाका निरूपण ४८२–५०४
४६ परमाणु–पुद्गलों आदि की स्थिति एवं अन्तरकालका निरूपण ५०५–५२८

४७ पुद्गल द्रव्यके अल्प बहुत्वका निरूपण ५२८–५४४
४८ नैरयिकों के असुरकुमार आदिकों के और एकेन्द्रियादिकों के आरंभ अनारम्भ आदिका निरूपण ५४५–५६८
४९ हेतु के स्वरूपका निरूपण ५६९–५८२

आठवां उद्देशक

५० आठवें उद्देशक के विषयका विवरण ५८३–५८४
५१ पुद्गल के स्वरूपका निरूपण ५८५–६३६
५२ जीवोंके वृद्धिहारू आदिका निरूपण ६३७–६७७

नववां उद्देशक

५३ नववें उद्देशक केविषयों का विवरण ६७८–६८०
५४ राजगृह नगरके स्वरूपका निरूपण ६८१–६८७
५५ प्रकाश और अन्धकार के स्वरूपका निरूपण ६८८–६९९
५६ नैरयिक आदि जीवोंके समयादि ज्ञानकानिरूपण ६००–७०९
५७ पार्श्वापत्योय स्थविर और महावीर स्वामीका संवाद ७१०–७३१
५८ देवलोक के स्वरूपका निरूपण ७३२–७३५

दसवां उद्देशक

५९ चन्द्रके स्वरूपका निरूपण ७३६–७५१

छट्ठे शतकके पहला उद्देशक

६० पहले उद्देशेके विषय का संक्षिप्त विवरण ७५२–७५५
६१ उद्देशेके विषय संग्राहक गाथा ७५६–७५६
६२ वेदना निर्जराके स्वरूपका निरूपण ७५७–७८२
६३ करण के स्वरूपका निरूपण ७८३–७९५
६४ वेदना और निर्जराके साहचर्यका निरूपण ७९६–८०१

दूसरा उद्देशक

६५ आहार के स्वरूपका निरूपण ८०२–८०३

तीसरा उद्देशक

६६ तीसरे उद्देशेके विषयोंका विवरण ८०४–८०८
६७ महाकर्म और अल्पकर्मके स्वरूपका निरूपण ८०९–८३२

६८ जीवके कर्मका निरूपण ८३२-८३९
६९ कर्म पुद्गलके उपचयका निरूपण ८४०-८६०
७० कर्मके भेद और उनकीस्थितिका निरूपण ८६१-९६२
७१ वेदक जीवके अल्प बहुत्वका कथन ९३३-९३८

चौथा उद्देशक

७२ चौथे उद्देशकके विषयों संक्षिप्त विषयविवरण ९३९-९४३
७३ जीवके सप्रदेश और अप्रदेशके स्वरूपका निरूपण ९४४-१०१५
७४ प्रत्याख्यानादिके स्वरूपका निरूपण १०१६-१०३१

पांचवां उद्देशक

७५ पांचवे उद्देशकके विषयोंका संक्षिप्त विवरण १०३२-१०३६
७६ तमस्काय के स्वरूपका निरूपण १०३७-१०७८
७७ कृष्णराजिके स्वरूपका निरूपण १०७७-११०४
७८ लोकान्तिक देवके विमान आदिका निरूपण ११०५-११२८

समाप्त